

शास्त्री प्रथम रवण, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि०-पञ्च

नवद्वय-वर्ष - काण्डे रवण

कवि- मैतिलीशरण युस्त

Date _____ Page _____

उस ओर द्रोणाचार्य थे, उसे और अर्जुन वीर थे,
युरु-शिष्य दोनों थोड़ते तीखे छारों तीर थे।
हैं पौर वाद-विवाद करते दो प्रबल पाँछत थे,
करने भजे दोनों परस्पर शस्त्र वे खणित तथा।
दोनों रथी उस श्रीपूता से वे शारों को थोड़ते,
जाना न जाता था कि वे कब वे प्रनुष पर आईं।
थे वाण दोनों के गगन में उस तरह फहरारहे—
जों उनिंगाली में अनेकों उड़ा-वर लहरारहे॥

आवार्द

प्रस्तुत पद के आध्यम से कवि कोरवों और पांडवों के बीच
हो रहे युद्ध का वर्णन करते हुए कहता है कि कोरवपक्ष
की ओर से आचार्य द्रोणाचार्य और पांडवों की ओर से
अर्जुन के बीच प्रभासान युद्ध चल रहा है। युरु-शिष्य
परस्पर एक दूसरे पर बड़ी तेजी के साथ छारों तीर
एक साथ ढोड़ने लगे। उस समय ऐसा प्रतीत होता था
कि दोनों हो सकांड परिष्ठ परस्पर वाद-विवाद कर रहे
हों वे दोनों ही एक दूसरे के शरों को काट रहे थे।
कवि मैतिलीशरण युस्त दोनों महान पश्चात्मीवरीं
के बीच हो रहे भर्कुर युद्ध का वर्णन करते हैं। कवि कहता
है कि दोनों महारथी युरु द्रोणाचार्य और अर्जुन उतनी तेजी
से एक दूसरे पर वाण की वेष्टि कर रहे थे कि यह जानना
कठिन था कि वे कब तीरों को प्रनुष की प्रत्यंचा पर
चढ़ाते हैं। दोनों के वाण आकाश में उस तरह फहरा
रहे थे जैसे तरंगों की माला के बीच में अनेकों झां
के गोले ऊपर लहरा रहे हैं।

इमदैव चरण प्रसाद

एस० प्रो० हिन्दी

24/04/2021

श०उ०स० मदाविं शुखसेना, पृष्ठीयाँ

उपशासकी, राष्ट्रभाषा छिन्दी, अ०द्वि० - पंच

Page No.

दिनांक - आग - २

गत्य आग

श्रीर्षक - शोज

लेखक - सचिवदानन्द दीरानंदवाल्याधन 'अद्वैय'

प्रश्न - 'शोज' श्रीर्षक कहानी का सार्वांग लिखें।

उत्तर :- 'शोज' कथा साहित्य में क्रान्तिकारी परिवर्तन के प्रतीत भावन कथाकार सचिवदानन्द दीरानंदवाल्याधन अद्वैय की सर्वीष्ट चरित्र कहानी है। प्रस्तुत कहानी में सम्बन्धों की वास्तविकता को एकान् वैयकितक अनुभूतियों से अलग जाकर सामाजिक सन्दर्भ में देखा जाया है। अद्वैय की धारिवारीक एकरसता के जिनी मार्मिकता से कहानी व्यक्त कर लियी है। उस की कहानियों में विरल है।

लेखक अपने दूर की के दृश्यों की बहन मालती जिसे सखी कहना अचित है, से मिलने अठारह जील धैर्य बलकर पहुँचता है। मालती और लेखक काजीवन के द्वितीय रौलने, पिटने, स्वेच्छा एवं स्वरक्षण होना तथा आतुरता के बोटे पन के बंधनों से मुक्त होना आज मालती विवाहित है, एक बच्चे की माँ भी है। वारलिप के क्रम में आर उतार-चढ़ाव में लेखक अनुभव करता है कि मालती की और वो में विचर-सा-भाव है, आनो वह भीतर कहीं कुछ चेष्टा कर रही है, किसी बीती बात को याद करने की। किसी बिवरे हुए वायुगेहड़ल की पुनः अगाकर गतिभान करनेकी और चैष्टा में शफलान हो चिर विघ्नुत हो गयी हो। मालती शोज को लहू की बैल की तरह उपलब्ध होनी है। उसका जीवन ग्रीष्मी मर्जी के सजान है जिसका अपरेशन उसके गाम्भीर पति हिंशा किया जाता है। पुरे दिन काम करना, बाटों की देख-भाल करना और पति का इंजार करना इनमें ही मानो उसका जीवन सिमट गया है। वातावरण, परिस्थिति और उसके प्रभाव में लेखक हुए एक शृंखली के चरित्र का मनोवैज्ञानिक उद्घाटन अंत्पन्न कल्पना करीति से लेखक यहाँ प्रस्तुत करता है। डॉ००४५ति के काम पर चले जाने के (श्रीष आगे)

बाहु का सारा समय भालती को पर में एकाई काटना
 होता है। उसका दुर्बल और चिड़िचड़ा पुत्र हमेशा
 शोता रहता है। भालती उसकी देख-आल करती है।
 मुबह से शत उधार हो जो तक पर के कार्यों में अपने को
 व्यक्त रखती है। उसका जीवन उदासी के बीच यंत्रवत
 चल रहा है। किसी प्रकार का उल्लास या उत्साह
 उसके जीवन में नहीं हो गए हैं।

इस प्रकार ऐसके अहंकारी ये भारतीय लोगों
 में प्रेरणा स्री के जीवन और मनोदशा पर सहानुभूति
 इर्दे भानवीय दृष्टि के निष्ठत करता है। कहानी के
 इर्दे में अनेक सामाजिक स्थून विचारोंने जक क्षेत्र में
 पैदा होते हैं।

२०१८ वर्षा त्रिवाहन

रसो० प्री० छिंदी २४/०५/२१

२०३० सं० महाविंशु वेना, ध्रीकीया

1. प्रश्न :- किसी भी रचना के मूल्यांकन में पाठक की क्या भूमिका होती चाहिए?

उत्तर :- यमाजवादी चिंतक डॉ० राम मनोहर लोहिया अपने निबन्ध 'रामायण' में पहली सूचना उठाते हैं कि किसी भी कृति या रचना के मूल्यांकन में पाठक की क्या भूमिका होती चाहिए। इसी सूचना का अन्त होते हुए डॉ० लोहिया कहते हैं कि पाठक की भूमिका तटस्थ होनी चाहिए। तटस्थता अतिकावश्यक होती है किसी भी रचना के अध्ययन में पाठक को प्रवाण्शाद से ग्रहित नहीं होना चाहिए। यदि पाठक पूर्व से ही किसी विशेष घारणा से समावित रहेगा तो उससे रचना की सम्बन्धक समीक्षा नहीं हो सकती हो पाठक को निपेक्ष हीकर रचनाया कृति के गुण-दोष के आधार पर समीक्षा करनी चाहिए। यदि कोई पाठक इसके अधार पर मूल्यांकन नहीं करता है तो वह मूल्यांकन सर्वश्राद्ध नहीं होता है।

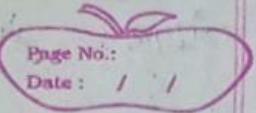
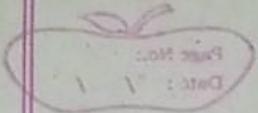
अतः पाठक का यह वाचित्व बनता है कि किसी लेखक या कवि की कृति का गठन अध्ययन करने के उपर्यांत उसके गुण-दोष के आधार पर उसकी समीक्षा होती चाहिए। ऐसा करके ही हम रचनाके साथ न्याय कर सकते हैं। डॉ० राम मनोहर लोहिया जी ने भी बिना वाग-द्वेष के अधार पर 'रामायण' श्रीर्थक निबन्ध का मूल्यांकन सफलता पूर्वक किया है।

2. प्रश्न :-

'रामायण' श्रीर्थक निबन्ध में डॉ० लोहिया जी ने रचनाके अध्ययन के क्या कहा है?

उत्तर :-

सश्वरचिंतक डॉ० लोहिया जी का कहना है कि विषय उग्रो-



सेंत गोस्टवामी तुलसी दालजी नारी स्वतंत्रता एवं समानता के जानहार और शानदार कविताओं उनका कहना है कि संत तुलसीदास ने 'सियाराम मय-सब जग आनी' कहकर समाज नारी सभाज्ञा अँखों उठाने का कार्य किया है। ऐसे कवि का यह भी कहना है कि कुछ पश्चपाती लोगों ने जोस्टवामी तुलसीदास की चौपाईयों का गलत और निरर्थक अर्थ निकालकर उन्हें नारी विरोधी बताने का प्रयास किया है। परन्तु वैसे कुछ इस लोगों का आशोप बिल्कुल भिशमार है। इसीलिए गोस्ट्वा जी ने सेंत गोस्टवामी तुलसीदालजी को नारियों का खवसे बड़ा रक्षक माना है।

डॉ. दीप पवाण प्रसाद
एसो. प्रौ. छिन्ही
राष्ट्रसंगम नाविन चुखसेना, प्रीर्णीया

24/10/2021